तिथि–10 नवम्बर 2018
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, ११९
युगाब्द-५११९, अंक-१०७, वर्ष-१२
कार्तिक, विक्रमी २०७५ (नवम्बर 2018)
मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्र: 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

ऋषि दयानन्द

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

परा णुदस्व मघवन्नमित्रान्त्सुवेदा नो वसू कृधि। अस्माकं बोध्यविता महाधने भवा वृधः सखीनाम्॥

–ऋ० ५। ३। २१। ५

व्याख्यान–हे (मघवन्) परमैश्वर्यवन् इन्द्र परमात्मान्! (अमित्रान्) हमारे सब शत्रुओं को (पराणुदस्व) परास्त कर दे। हे दातः! (सुवेदाः नो वसू कृधि) हमारे लिए सब पृथिवी के धन सुलभ (सुख से प्राप्त) कर। (महाधने) युद्ध में [(अस्माकम्)] हमारे और हमारे मित्र तथा सेनादि के (अविता) रक्षक (वृधः) वर्द्धक (भव) आप ही हो तथा (बोधि) हमको अपने ही जानो। हे भगवन्! जब आप ही हमारे योद्धारक्षक होंगे, तभी हमारा सर्वत्र विजय होगा। इसमें सन्देह नहीं ।।

सम्पादकीय

शुभ दीपावली...

पाठक महानुभावों! हम सभी बाल्यकाल से सुनते आए हैं कि **'शुभ दीपावली'**। हमसे पूर्व जो हमारे पूर्वज हुए हैं उन्होंने भी यह शुभाशय सुना ही होगा और उनसे पूर्व जो पीढ़ियाँ हुई हैं, उन्होंने भी। किन्तु जब हम कभी गम्भीरता से विचारते हैं, चिन्तन–मनन करते हैं, तब समझ में आता है कि यह शुभ की कामना हम प्रत्येक उत्सव पर, पर्व पर, त्यौहार पर, संस्कार पर करते हैं और करनी भी चाहिए। परन्तु क्या मात्र वाणी से हम कामना करते रहें तो शुभ होगा? अथवा 'शुभ' कहने के साथ कोई कर्त्तव्य बोध, उत्तरदायित्व भी होना चाहिए? और होना चाहिए तो क्या हमने या हमारे निकटवर्त्ती पूर्वजों ने कभी इसे समझा है? क्या अब हम समझना चाहते हैं? क्या हम समझने को तैयार हैं? या क्या हम समझते हुए भी अपने उत्तरदायित्वों से विमुख होकर मात्र 'लकीर के फकीर' बनकर एक औपचारिकता मात्र का निर्वहन करते चले जा रहे हैं? और यदि यह मात्र औपचारिक निर्वाह है अथवा यूँ कहें कि यह मात्र विवशता है, यह कि हमने कभी विचारा ही नहीं है, तो निश्चित ही यह मनुष्यधर्म तो नहीं है। क्योंकि मनुष्य की परिभाषा में ऋषियों ने लिखा है– **मननात् मनुष्यः।** अर्थात् जो मनन पूर्वक, विचार पूर्वक, (सोच–विचार कर) बोलता, लिखता, कर्म करता है वही मनुष्य कहलाता है और यही हमारी परम्पराओं में भी हमें प्राप्त होता है। युद्धक्षेत्र में जाते हुए कौरव–पाण्डवों को उनके पूर्व पुरुष–महिलाएँ विचारकर ही आशीर्वचन कहते थे। किन्तु वर्त्तमान में ही नहीं अपितु अब से सहस्त्र–दो सहस्त्र वर्ष पूर्व से बिना विचारे ही शुभकामनाएँ–आशीर्वचन दिए जाने लगे। परिणाम कुछ न निकला, अब भी नहीं निकलता है। जब हम गहन विचार करते हैं तो पाते हैं कि जबसे हम सबकी विचारधाराएं भिन्न–भिन्न मतों–पन्थों की ओर उन्मुख हुई हैं, तब से हम करोड़ों लोग मननशील–विचारशील न रह पाये, फलस्वरूप जो भी मानने लगे, जो भी करने लगे, जो भी बोलने लगे उसी को सत्य सिद्ध करने के लिए अपने–अपने तर्क गढ़ने लग गये, जो सत्य है उसके पक्ष में तो तर्क किया और जो असत्य था स्वार्थ–हठ या दुराग्रहवश होकर मान बैठे, उसके पक्ष में तर्क के नाम पर कुतर्कों की झड़ी लगा दी, अपने को बुद्धिमान–विद्वान मानने लगे, अपनी पीठ आप ठोकने में कोई न्यूनता नहीं छोड़ी, किन्तु सत्य क्या है यह विचारना ही उचित नहीं समझा। विश्व में अन्यत्र कहीं ऐसे पर्व, त्यौहार, उत्सव तथा संस्कार मनाए नहीं जाते, यदि कहीं कुछ होता है तो

शेष अगले पृष्ठ पर

संपादकीय का शेष...

उसमें मास, ऋतु, काल की कोई वैज्ञानिकता नहीं है, कोई तर्क संगत आधार नहीं है, जबकि हमारी परम्पराओं में जो भी सनातन पर्व, त्यौहार, उत्सव या संस्कार हैं, वे सभी मास, ऋतु सर्वकालिक महत्ता के साथ तार्किक (लॉजिकली) तथ्यों से परिपुष्ट हैं, अर्थात् उनमें शुभ परिपाटी अन्तर्निहित है। पुनरपि उन पर्व, त्यौहार, उत्सव व संस्कारों को मनाने वाले जो चेतन हैं, जो मानव हैं वे उस शुभ परिणति को न तो ग्रहण कर पाते हैं न ही उसके फलितार्थ तक पहुँच ही पाते हैं, जिससे 'शुभ' यह मात्र एक शब्द बनकर विचरता रहता है और अशुभ उस पर हावी हो जाता है।

आइए! तनिक विचार करें! इस दीपावली के नाम पर हमारे अपने ही लोग कितना अशुभ आचरण नहीं करते? जुआ, सट्टा, शराब, मांसाहार, और भी न जाने क्या-क्या? और कहते हैं शुभ दीपावली!

अतएव! विचारशील जनों को यह अवश्य विचारना चाहिए। हम तो यही विचारते हैं कि मनुष्य का शुभाचरण अर्थात् धर्माचरण ही 'शुभ' है। जितना-जितना व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र धर्माचरण की ओर बढ़ेगा, आगे चलेगा, उतना-उतना ही शुभ होगा और यह धर्माचरण वह नहीं है जो लोग समझ रहे हैं या कि टी.वी. चैनलों पर और सोसियल मीडिया पर देख-पढ़ रहे हैं, कि लक्ष्मी पूजन के साथ झाड़ू पूजन कीजिए, कुत्ता पूजन कीजिए, गोवर्धन पर गाय के गोबर की पूजा कीजिए आदि आदि। धर्माचरण से तात्पर्य परमात्मा प्रोक्त सार्वकालिक, सार्वभौमिक नियमों से है। जितना-जितना मानव इनको धारण कर व्यवहार में लायेगा उतना-उतना 'शुभ' को प्राप्त करता जाएगा। इसलिए जब हम कहते हैं तो कुछ करना पड़ेगा और कुछ करने के लिए सर्वप्रथम अपने अन्तःकरण को ज्ञान के प्रकाश से आलोकित करना होगा, तमसाच्छन्न अन्तःकरण वाले चाहे जितने दीप जला लें, चाहे कितनी आलियां (पंक्तियाँ) बना लें, घी की बनाएं, तेल की बनाएं, मोमबत्ती की बनाएं अथवा छोटी-छोटी विद्युत लड़ियों की बनाएं, कुछ परिवर्तन न होगा। अपितु यही कहावत चरितार्थ होकर रह जाएगी कि **'चार दिनों की चाँदनी और फिर अन्धेरी रात'।** अतः आइए इस पावन दीपावली के उपरान्त अब 'शुभ' की आराधना करें!, सत्य की आराधना करें!, धर्म की आराधना करें! अपने अन्दर से प्रारम्भ करें और फिर बाहर भी करें, घर में, परिवार में, समाज में और अपने इस सर्वश्रेष्ठ सनातन राष्ट्र में भी करें। पहले स्वयं करें! और तब कहें **'शुभ दीपावली'**।।

आर्य क्षत्रिय महासम्मेलन की झलकियाँ

राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा के प्रचारक विभिन्न विद्यालयों में

क्रान्तिकारी भगतसिंह की वैचारिक पृष्ठभूमि

-आचार्य सतीश

भगत सिंह ने अपने को नास्तिक होने के जो कारण लिखे उनमें से एक कारण की चर्चा हम पिछले लेख में कर चुके हैं। अपने लेख में उन्होंने दो कारण और गिनाए हैं, उन पर हम चर्चा कर लेते हैं। भगत सिंह अपने लेख में लिखते हैं कि यदि ईश्वर है और जैसा बताया जाता है कि वह सर्वशक्तिमान, दयालु है, न्याय करने वाला है, तो फिर संसार भर में इतना शोषण, भुखमरी, गरीबी, अन्याय, अत्याचार, पाप आदि क्यों है? ईश्वर इन्हें ठीक क्यों नहीं कर देता? क्यों शोषण को समाप्त नहीं कर देता? क्यों अन्याय करने वाले को तुरन्त सजा देकर उस अन्याय को समाप्त नहीं करता? क्यों दुनियाँ से गरीबी समाप्त नहीं कर देता और इस प्रकार के प्रश्न केवल भगत सिंह ने ही नहीं उठाए हैं अपितु अनेकों युवकों ने उठाये हैं, आज भी उठाते हैं। और विशेषकर ईश्वर की सत्ता को नकारने का भी इसी को एक बहुत बड़ा कारण मानते हैं। सामान्य दृष्टि से देखने पर यह बात लोगों को प्रभावित भी करती है और अनेक युवक इससे प्रभावित होकर के ईश्वर पर विश्वास करना ही छोड़ देते हैं, क्योंकि उन्हें इसका उत्तर नहीं सूझता और दूसरा कोई उसके प्रश्न का तर्क संगत समाधान कर नहीं पाता है।

युवाओं के इस प्रकार के प्रश्नों का समाधान केवल वैदिक सिद्धान्तों में है। ऋषि-मुनियों ने इसका समाधान दिया है। बिना वेद के सिद्धान्तों को जाने इस गुत्थी को सुलझाया नहीं जा सकता। त्रैतवाद से ही इसका समाधान है कि केवल ईश्वर की ही सत्ता अनादि नहीं है अपितु जीवात्मा की सत्ता भी अनादि है जो ईश्वर की तरह ही चेतन है और क्रिया करने में सक्षम है। और इसके साथ-साथ प्रकृति की सत्ता भी अनादि है जो जड़ है। इन तीन मूल सत्ताओं के बिना संसार का व्यवहार चल ही नहीं सकता है और इनमें से किसी एक के भी न होने से सारी व्यवस्थाएं इस रूप में बन ही नहीं सकती थी। अगर अकेला ईश्वर ही होता तो फिर इस सारे सांसारिक व्यवहार की आवश्यकता ही क्या थी? यह संसार किस से निर्मित होता और क्यों निर्मित किया जाता? बिना पदार्थ के परमात्मा सृष्टि बनाता कैसे और बनाता किस प्रयोजन के लिए? चेतन सत्ता अभौतिक है और अभौतिक से भौतिक तत्व की उत्पत्ति कैसे हो? और यदि ईश्वर अकेला है तो सृष्टि की उत्पत्ति किसके लिए है? अत: जीवात्मा द्वारा अपने कर्मों का फल भोगा जा सके उसके लिए सृष्टि का निर्माण है। नए कर्म जीव तभी कर सकता है जब वह कर्म करने में स्वतन्त्र हो। जब जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है तो ईश्वर उसके काम में बाधा उत्पन्न करके उसकी स्वतन्त्रता को बाधित क्यों करेगा? ईश्वर ने व्यवस्था बनाई है, नियम बनाएं हैं, जिससे यह सारी व्यवस्था संचालित होती है। ईश्वर अपने नियमों से बंधा रहता है। वह अपने नियमों के विरुद्ध नहीं चलता है। जीव कर्म करने में स्चतन्त्र हैं लेकिन वह ईश्वरीय नियमों का अज्ञानता, स्वार्थ के कारण उल्लघंन करता है। ईश्वर नियमों के अर्न्तगत जीव को नियन्त्रित करता है। और वह भी इस प्रकार कि उसकी कर्म करने में स्वतन्त्रता बनी रहती है। हाँ व्यवस्था के अनुसार ईश्वरीय नियमों के विरुद्ध चलने पर अवश्य उसे दुख उठाना पड़ता है। व्यवस्था को बनाए रख कर सुख प्राप्त करते रहना या व्यवस्था को स्वार्थ व अज्ञानता में बिगाड़कर दूसरे के दुख का कारण बनने में व अन्तत: स्वयं भी दुख उठाने में जीव स्वतन्त्र है। जितनी भी समस्याएं संसार भर में भगत सिंह ने अपने लेख में गिनायी या अन्य युवक गिनाते हैं उन सब का कारण जीव स्वयं है। उसमें ईश्वर का दोष नहीं। वह बढ़िया व्यवस्था देता है, उसे ठीक रखना हमारा दायित्व है, ठीक नहीं रखने पर संसार भर में लूट-पाट, अत्याचार, शोषण, गरीबी , गुलामी आदि को व्यापक हम करते हैं तो यह दोष हमारा है। यदि हम अज्ञानता व स्वार्थ को छोड़ देवें और ईश्वर की व्यवस्था के अनुसार चलें तो इन सब समस्याओं का समाधान है। हमारी कर्म की स्वतन्त्रता में ईश्वर बाधक नहीं है, वह होता भी नहीं है। त्रैतवाद के सिद्धान्त को यदि युवक ठीक से समझ जाए, उसे ठीक समझा दिया जाए तो व्यवस्था को ठीक करने लगता है न कि व्यवस्थाओं के लिए किसी ईश्वर जैसी शक्ति को दोष देता है।

शहीद भगतसिंह चूंकि कम आयु में ही स्वाधीनता संग्राम में कूद गए थे अत: इन गम्भीर सिंद्धान्तों को समझने व किसी के द्वारा समझाने का समय ही नहीं था। बहुत ही कम आयु में भगतसिंह का बलिदान हो गया, समय मिल भी नहीं पाया इन सब दार्शनिक सिद्धान्तों पर विचार-चर्चा करने का। इसका वर्णन हम पिछले लेख में भी कर चुके हैं। अत: उस समय तक इन दार्शिनिक नियमों पर वे जितना जान पाए उसी के अनुसार उनके विचार बने और उन्होंने वही प्रकट किए। उन्हीं विचारों के आधार पर हम जो निष्कर्ष निकालना चाहें निकाल सकते हैं और उससे न ही उनके महत्व पर और न ही ईश्वर के अस्तित्व पर कोई प्रश्नचिन्ह खड़ा होता है। इतना अवश्य है कि यदि उनका जीवन लम्बा होता, तो जिस स्तर के वो एक बुद्धिमान युवक थे अपने आने वाले समय में इन सिद्धान्तों को जान भी जाते, समझ भी जाते और ईश्वर सम्बन्धी उनकी विचारधारा में भी अवश्य ही परिवर्तन होता। किसी व्यक्ति ने किसी विषय पर, किस आधार पर अपने विचार बनाए हैं यह महत्वपूर्ण होता है और साम्यवादियों द्वारा भगतसिंह के प्रमाणों के आधार पर ईश्वर की सत्ता को चुनौती देने में कोई दम नहीं है। भगतसिंह के वे विचार केवल उनकी तात्कालिक परिस्थितियों, उस अल्पायु में उनके ज्ञान के आधार पर थे। हर व्यक्ति हर विषय का विशेषज्ञ नहीं होता है। प्रत्येक की बौद्धिक क्षमता भी समय के साथ बढ़ती रहती है। बौद्धिक क्षमता के बढ़ने के साथ-साथ विचारों में भी परिवर्तन होता है, यह सार्वभौमिक सत्य है, आध्यात्म जैसे सूक्ष्म विषय में तो यह बात और अधिक प्रबलता के साथ लागू होती है।

इसी परिपेक्ष्य में सरदार भगतसिंह के विचारों को समझना चाहिए। अभी एक कारण और उनके द्वारा अपने नास्तिक होने के पक्ष में दिया गया है, जिसकी चर्चा हम अगले अंक में करेंगे।

-शेष अगले अंक में...

सिद्धान्त रक्षा का उपाय-सतत् परम्परा

आर्यो! आर्याओं! वेदाज्ञा है **'रुहो रुरोह रोहितः॥'** अर्थात्- हे उन्नतिशील, उन्नत हो, जहाँ तक सम्भव हो। इस वेदाज्ञा को क्रियान्वित करते हुए, उन्नति के सोपान चढ़ते हुए राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा ने विजयीदशमी पर्व (19 अक्टूबर 2018) के अवसर पर 18 अक्टूबर 2018 **आर्य क्षत्रिय महासम्मेलन** हरियाणा प्रान्त में, जनपद कैथल के महाराजा सूरजमल जाट स्टेडियम में डिंडिम घोष के साथ सम्पन्न किया। आर्य क्षत्रियों के शौर्यपूर्ण वीरोचित प्रदर्शनों, नगर में अनुशासित पैदल मार्च, शस्त्र प्रदर्शन, बड़े ही भव्य यज्ञ के आयोजन, विद्वान आचार्यों के उत्कृष्ट उद्बोधनों की ललकारों ने समस्त जनपद कैथल वा हरियाणा प्रान्त ही नहीं अपितु सम्पूर्ण राष्ट्र को हर्षित-पुलकित, रोमांचित एवं आंदोलित कर दिया एवं आर्य क्षत्रियों के प्रति एक विश्वास आर्यों में उत्पन्न कर दिया। सैकड़ों वर्षों की पराधीनता एवं जौहर की अग्नियों द्वारा भस्मीभूत छिन्न-भिन्न खण्ड-खण्ड, जिसे खोए सदियाँ बीत गई उस विश्वास को पुनः प्राप्त करने का आर्य क्षत्रियों ने पुनः संकल्प लिया। कार्यक्रम का स्वल्प समय में प्रशंसनीय, पुरुषार्थपूर्ण सुन्दर आयोजन आर्य क्षत्रिय सभा जनपद कैथल द्वारा राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा के निर्देशापुसार किया गया।

कार्यक्रम का आरम्भ 18 अक्टूबर 2018 को प्रातःकाल लगभग 9 बजे सुविशाल, भव्य, वेद परायण यज्ञ द्वारा हुआ, जिसने निश्चित रूप से हमारे पूर्वज आर्य पुरुषाओं के अश्वमेधादि भव्य गरिमापूर्ण यज्ञों की स्मृति को पुनर्जीवित कर दिया। यज्ञ के ब्रह्मा आदरणीय आचार्य गौतम जी गुरुकुल टटेसर, दिल्ली से ब्रह्मचारियों सहित रहे। तत्पश्चात एक ऐतिहासिक निर्णय को साकार करते हुए हमारे मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए सरलता, उत्साह, विद्वता की प्रतिमूर्ति राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के अध्यक्ष आदरणीय आचार्य जितेन्द्र जी का क्षत्रियोचित सम्मान किया गया। तदुपरान्त मुख्य अतिथि महोदय ने परेड निरीक्षण, ध्वजारोहण, राष्ट्रीय प्रार्थना जयघोषोपरान्त मंच पर उपस्थित होकर बड़ा ही नेत्रोंन्मीलनकारक, गौरवशाली, प्रेरक उद्बोधन देते हुए कहा कि-वर्तमान में न्याय व्यवस्था जिसके भी (राजपुरुष-पुलिस आदि, प्राड़विवाक-वकील) हाथ में है, उनके समीप जाते हुए सामान्य जन भय, दुख, निराशा का अनुभव करती है, जबकि आर्य क्षत्रियों के समीप आर्यप्रजा न्याय हेतु जाते हुए निर्भीकता, सुख, आशा का अनुभव करती थी। अस्तु।

तत्पश्चात् कैथल नगर की सर्वप्रमुख सड़कों पर सहस्रों आर्य क्षत्रियों द्वारा सुदीर्घ, अनुशासित, सुन्दर, जयघोषों से सम्पूर्ण नगर को आप्लावित कर देने वाला, जिसमें आर्य क्षत्रियों का उत्साह देखते ही बनता था, जो कैथल नगर वासियों के लिए कौतूहल, आश्चर्य, रोमांचकारी था, ऐसा लगभग 4 किमी. लम्बा पैदल मार्च किया। जोकि आर्य क्षत्रियों की विद्वानों की सुरक्षा करने के ढ़ंग का एक अनूठा ही दृश्य उपस्थित कर गया और स्मरण करा गया कि-

विश्वामित्र ऋषि के जप-तप तभी सफल होते हैं।
जब पहरे पर स्वयं धनुर्धर राम खड़े होते हैं॥

नगर भ्रमणोपरांत, आदरणीय आर्य श्रीरामनिवास जी पानीपत के सुमधुर प्रेरक वीररस से सिक्त भजनोपरांत, भोजनोपरांत आर्य क्षत्रियों के वीरोचित प्रदर्शनों उदाहरणार्थ कुश्ती, करली, निरुद्धम्, अग्निचक्र, लाठीद्वन्द्व, शस्त्रप्रदर्शन आदि ने अजीब रोमांचकारी दृश्य उपस्थित कर दिया।

तत्पश्चात अनेकों विद्वान वक्ताओं, आचार्यों एवं 'मुख्य वक्ता' के रूप में दिल्ली से पधारे सांगोपांगवेद विद्यापीठ आर्ष गुरुकुल टटेसर के प्राचार्य, निर्मात्री के अमूल्यनिधिस्वरूप आचार्य एक अद्भुत संकल्पना, विश्वभर के समस्त आर्यगणों को एक होने का अवसर देने वाले आर्य महासंघ के अध्यक्ष, अतीव आदरणीय आचार्य हनुमत्प्रसाद उपाध्याय जी का अत्यंत सारगर्भित, समतामयिक, ललकारपूर्ण, मार्गप्रशस्तिकारक उद्बोधन हुआ। अस्तु

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि, मुख्य वक्ता, यज्ञ के ब्रह्मा आदि के अतिरिक्त अनेकों आचार्य यथा श्रद्धेय आचार्य लोकनाथ जी, आचार्य अश्विनी जी, आचार्य धर्मपाल जी, आचार्य अवनीश जी आदि एवं राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा के पदाधिकारीगण एवं आर्य क्षत्रियों सहित उपस्थत रहे। आर्य वीरेन्द्र जी (अध्यक्ष), आर्य धनुष्मान जी (मेरठ) महासचिव, आर्य दिनेश जी (सूचना सचिव), आर्य रवि जी (पानीपत, कोषाध्यक्ष), राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा की गौरवपूर्ण उपस्थिति रही।

राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा के इस कार्यक्रम में पधार कर परम्परा में सतत् प्रवाह बनाने में सहयोगी बने सभी विद्वानों, आचार्यों, आयोजकों, कार्यकर्ताओं, पदाधिकारियों, आर्यक्षत्रियों एवं प्रत्यक्ष व परोक्षरूप से सहयोग देने वाले सभी सज्जनों, मातृशक्ति, युवाओं, वृद्धों, बालकों आदि का धन्यवाद करती हैं।

आर्य क्षत्रिय विजय प्रताप द्वारा कार्यक्रम का समापन सायंकाल लगभग 5 बजे जय आर्य, जय क्षत्रिय, जय आर्यावर्त्त के भीषण जय घोष गर्जन के उपरान्त भावी कार्यक्रमों को और सुन्दर, व्यवस्थित, भव्य, अनुशासित और सिद्धान्तरक्षक बनाने की भावना के साथ इस संकल्प से हुआ कि- सिद्धान्तों की रक्षा का उपाय सतत् परम्परा है।

-आर्य धनुष्मान
(महासचिव, राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा)

आओ यज्ञ करें!

अमावस्या	7 नवम्बर	दिन-बुधवार	मास-कार्तिक	ऋतु-हेमन्त	नक्षत्र-स्वाती
पूर्णिमा	23 नवम्बर	दिन-शुक्रवार	मास-कार्तिक	ऋतु-हेमन्त	नक्षत्र-कृतिका
अमावस्या	7 दिसम्बर	दिन-शुक्रवार	मास-मार्गशीर्ष	ऋतु-हेमन्त	नक्षत्र-ज्येष्ठा
पूर्णिमा	22 सितम्बर	दिन-शनिवार	मास-मार्गशीर्ष	ऋतु-हेमन्त	नक्षत्र-मृगशिरा

व्यवहारभानुः - आचरण की शिक्षा के लिए ऋषि का श्रेष्ठ ग्रन्थ

ऋषि दयानन्द ने वेद के सिद्धान्तों को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए अन्य कार्यों के साथ-साथ एक पूर्णकालिक लेखक के रूप में भी अनेकों ग्रन्थों की रचना की है। उन्होंने विशुद्ध व्याकरण के ग्रन्थों से लेकर वेदभाष्य तक व सत्यार्थ प्रकाश जैसे कालजयी ग्रन्थ से लेकर सामान्य सिद्धान्त अनुरूप व्यवहार के लिए व्यवहारभानु जैसी सामान्य जन के लिए भी अत्यन्त उपयोगी पुस्तकों की रचना की है। ऋषि का एक-एक शब्द व पंक्ति व्यक्ति के लिए अमूल्य प्रेरणा का स्रोत है। आइए उनकी व्यवहारभानुः पुस्तक के स्वाध्याय द्वारा वैदिक सिद्धान्तों के परिपालन की दिशा में आगे बढ़कर अपने-अपने आचरण को वेदानुकुल बनाएं और ऋषि के ही शब्दों के अनुरूप- **''अपने तथा अपने-अपने सन्तान तथा विद्यार्थियों का आचार अत्युत्तम करें, कि जिससे आप और वे सब दिन सुखी रहें।''**

यहाँ प्रस्तुत है व्यवहारभानुः पुस्तक, आईये इसका स्वाध्याय प्रारंभ करते हैं। ध्यान से पढ़ें तथा विचार करें कि यदि हम ऋषि के बताए अनुसार व्यवहार करते हैं तो हम कितना अपना व दूसरों का हित कर सकते हैं और समाज में व्याप्त अनेक प्रकार के दुर्व्यवहारों से न केवल स्वयं बच सकते हैं अपितु अपनी सन्तानों तथा शिष्यों को भी बचा सकते हैं।

जो विद्या पढ़ें और पढ़ावें वे निम्नलिखित दोषयुक्त न हों -

विद्यार्थियों के दोष

आलस्यं मदमोहौ च चापल्यं गोष्ठिरेव च ।
स्तब्धता चाभिमानित्वं तथाऽत्यागित्वमेव च ।
एते वै सप्त दोषाः स्युः सदा विद्यार्थिनां मताः ॥ ३॥
सुखार्थिनः कुतो विद्या नास्ति विद्यार्थिनः सुखम्।
सुखार्थी वा त्यजेद्विद्यां विद्यार्थी वा त्यजेत् सखम् ॥ ४॥

[महा० उद्यो० विदुरप्रजागर अ० ४० । श्लोक ५-७]

आलस्य, अभिमान, नशा करना [वा] मूढ़ता, चपलता, व्यर्थ ईधर-उधर की अण्ड-बण्ड बातें करना, जड़ता-कभी पढ़ना कभी न पढ़ना, अभिमान और लोभ-लालच-ये ७ विद्यार्थियों के लिए विद्या के विरोधी दोष हैं। क्योंकि जिसको सुख-चैन करने की इच्छा है, उसको विद्या कहाँ? और जिसका चित्त विद्याग्रहण करने-कराने में लगा है, उसको विषय-सम्बन्धी सुख-चैन कहाँ ? इसलिए विषयसुखार्थी विद्या को छोड़े, और विद्यार्थी विषयसुख से अवश्य अलग रहे, नहीं तो परमधर्मरूप विद्या का पढ़ना-पढ़ाना कभी नहीं ही सकेगा । ये श्लोक भी महाभारत विदुरप्रजागर अध्याय ४० में लिखे हैं।

ब्रह्मचर्य के गुण

प्रश्न-कैसे-कैसे मनुष्य सब की विद्याओं की प्राप्ति कर और करा सकते हैं?

उत्तर- ब्रह्मचर्यस्य च गुणं शृणु त्वं वसुधाधिप ।
आजन्ममरणाद्यस्तु ब्रह्मचारी भवेदिह ॥ १॥
न तस्य किञ्चिदप्राप्यमिति विद्धि नराधिप।
ब्रह्म्यः कोट्यस्त्वृषीणां च ब्रह्मलोके वसन्त्युत ॥ २॥
सत्ये रतानां सततं दान्तानामूर्ध्वरेतसाम् ।
ब्रह्मचर्यं दहेद्राजन् सर्वपापान्युपासितम् ॥ ३॥

भीष्मजी युधिष्ठर से कहते हैं कि-हे राजन्! तू ब्रह्मचर्य के गुण सुन। जो मनुष्य इस संसार में जन्म से लेकर मरणपर्यन्त ब्रह्मचारी होता है ।।१।।

उसको कोई शुभगुण अप्राप्य नहीं रहता, ऐसा तू जान। कि जिसके प्रताप से अनेक करोड़ ऋषि ब्रह्मलोक, अर्थात् सर्वानन्दस्वरूप परमात्मा में वास करते, और इस लोक में भी अनेक सुखों को प्राप्त होते हैं।। २।।

जो निरन्तर सत्य में रमण, जितेन्द्रिय, शान्तात्मा, उत्कृष्ट शुभ-गुण-स्वभावयुक्त और रोगरहित पराक्रम सहित शरीर, ब्रह्मचर्य, अर्थात् वेदादि सत्य-शास्त्र और परमात्माा की उपासना का अभ्यास कर्मादि करते हैं, उनके वे सब उत्तम काम और दुःखों को नष्ट कर सर्वोत्तम धर्मयुक्त कर्म और सब सुखों की प्राप्ति करानेहारे होते। और इन्हीं के सेवन से मनुष्य उत्तम अध्यापक और उत्तम विद्यार्थी हो सकते हैं ।।३।।

शूववीर के लक्षण

प्रश्न-'शूरवीर' किनको कहते हैं ?

उत्तर- वेदाऽध्ययनशूराश्च शूराश्चाध्ययने रताः ।
गुरुशुश्रूषया शूराः पितृशुश्रूषयाऽपरे ॥ १॥
मातृशुश्रूषया शूरा भैक्ष्यशूरास्तथाऽपरे।
अरण्य गृहवासे च शूराश्चाऽतिथिपूजने ॥ २॥

जो मनुष्य वेदादि शास्त्रों के पढ़ने-पढ़ाने में शूरवीर, जो दुष्टों के दलन और श्रेष्ठों के पालन में शूरवीर, अर्थात् दृढ़ोत्साही उद्योगी, जो निष्कपट, परोपकारक अध्यापकों की सेवा करके शूरवीर, जो अपने जनक (पिता) की सेवा करके शूरवीर ।। १।।

जो माता की परिचर्या से शूर, जो संन्यासाश्रम से युक्त अतिथिरूप होकर सर्वत्र भ्रमण करके परोपकार करने में शूर, जो वानप्रस्थाश्रम के कर्म और जो गृहाश्रम के व्यवहार में शूर होते हैं, वे ही सब सुखों के लाभ करने-कराने में अत्युत्तम होके धन्यवाद के पात्र होते हैं कि जो अपना तन, मन, धन, विद्या और धर्मादि शुभगुण ग्रहण करने में सदा उपयुक्त करते हैं ।।२।।

प्रश्न-'शिक्षा' किसको कहते हैं ?

उत्तर-जिससे मनुष्य विद्या आदि शुभगुणों की प्राप्ति और अविद्यादि दोषों को छोड़के सदा आनन्दित हो सकें, वह शिक्षा कहाती है।

प्रश्न-'विद्या' और 'अविद्या' किसको कहते हैं?

उत्तर-जिससे पदार्थ का स्वरूप यथावत् जानकर, उससे उपकार लेके अपने और दूसरों के लिए सब सुखों को सिद्ध कर सकें, वह 'विद्या' और जिससे पदार्थों के स्वरूप को उल्टा जानकर अपना और पराया अनुपकार कर लेवें, वह 'अविद्या' कहाती है।

-क्रमशः ....

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आयोजित दो दिवसीय सत्रों व सभा से सम्बन्धित नवीन जानकारी सभा की बेवसाईट–

www.aryanirmatrisabha.com

पर उपलब्ध है। अत: आप वहाँ से जानकारी ले सकते हैं। यह पत्रिका भी प्रत्येक मास दिनांक 10 को सभा की बेवसाईट पर डाल दी जाती है अत: पत्रिका को पढ़ने के लिए साईट के लिंक

www.aryanirmatrisabha.com/पत्रिका

पर जाएं।

25 अक्टूबर–23 नवम्बर 2018 **कार्तिक** ऋतु– हेमन्त

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
			अश्विनी कृष्ण प्रतिपदा 25 अक्टूबर	भरणी कृष्ण द्वितीया 26 अक्टूबर	कृतिका कृष्ण तृतीया 27 अक्टूबर	रोहिणी कृष्ण चतुर्थी 28 अक्टूबर
आर्द्रा कृष्ण पंचमी 29 अक्टूबर	पुनर्वसु कृष्ण षष्ठी 30 अक्टूबर	पुष्य कृष्ण सप्तमी 31 अक्टूबर	आश्लेषा कृष्ण अष्टमी 1 नवम्बर	मघा कृष्ण नवमी/दशमी 2 नवम्बर	पू॰ फाल्गुनी कृष्ण एकादशी 3 नवम्बर	उ॰ फाल्गुनी कृष्ण द्वादशी 4 नवम्बर
हस्त कृष्ण त्रयोदशी 5 नवम्बर	चित्रा कृष्ण चतुर्दशी 6 नवम्बर	स्वाती कृष्ण अमावस्या 7 नवम्बर	विशाखा शुक्ल प्रतिपदा 8 नवम्बर	अनुराधा शुक्ल द्वितीया 9 नवम्बर	ज्येष्ठा शुक्ल तृतीया 10 नवम्बर	मूल शुक्ल चतुर्थी 11 नवम्बर
पूर्वाषाढ़ा शुक्ल पंचमी 12 नवम्बर	उत्तराषाढ़ा शुक्ल षष्ठी 13 नवम्बर	श्रवण शुक्ल सप्तमी 14 नवम्बर	श्रवण शुक्ल सप्तमी 15 नवम्बर	धनिष्ठा शुक्ल अष्टमी 16 नवम्बर	शतभिषा शुक्ल नवमी 17 नवम्बर	पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल दशमी 18 नवम्बर
उत्तराभाद्रपदा शुक्ल एकादशी 19 नवम्बर	रेवती शुक्ल द्वादशी 20 नवम्बर	अश्विनी शुक्ल त्रयोदशी 21 नवम्बर	भरणी शुक्ल चतुर्दशी 22 नवम्बर	कृतिका शुक्ल पूर्णिमा 23 नवम्बर		

24 नवम्बर–22 दिसम्बर–2018 **मार्गशीर्ष** ऋतु– हेमन्त

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
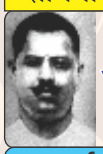 रामप्रसाद बिस्मिल बलिदान दिवस 19 दिसम्बर					रोहिणी कृष्ण प्रतिपदा/द्वितीया 24 नवम्बर	मृगशिरा कृष्ण तृतीया 25 नवम्बर
आर्द्रा कृष्ण चतुर्थी 26 नवम्बर	पुनर्वसु कृष्ण पंचमी 27 नवम्बर	पुष्य कृष्ण षष्ठी 28 नवम्बर	मघा कृष्ण सप्तमी 29 नवम्बर	पू॰ फाल्गुनी कृष्ण अष्टमी 30 नवम्बर	उ॰ फाल्गुनी कृष्ण नवमी 1 दिसम्बर	हस्त कृष्ण दशमी 2 दिसम्बर
चित्रा कृष्ण एकादशी 3 दिसम्बर	स्वाती कृष्ण द्वादशी 4 दिसम्बर	विशाखा कृष्ण त्रयोदशी 5 दिसम्बर	अनुराधा कृष्ण चतुर्दशी 6 दिसम्बर	ज्येष्ठा कृष्ण अमावस्या 7 दिसम्बर	मूल शुक्ल प्रतिपदा 8 दिसम्बर	मूल शुक्ल द्वितीया 9 दिसम्बर
पूर्वाषाढ़ा शुक्ल तृतीया 10 दिसम्बर	उत्तराषाढ़ा शुक्ल चतुर्थी 11 दिसम्बर	श्रवण शुक्ल पंचमी 12 दिसम्बर	धनिष्ठा शुक्ल षष्ठी 13 दिसम्बर	शतभिषा शुक्ल सप्तमी 14 दिसम्बर	पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल अष्टमी 15 दिसम्बर	उत्तराभाद्रपदा शुक्ल नवमी 16 दिसम्बर
रेवती शुक्ल नवमी 17 दिसम्बर	अश्विनी शुक्ल दशमी 18 दिसम्बर	भरणी शुक्ल एकादशी/द्वादशी 19 दिसम्बर	कृतिका शुक्ल त्रयोदशी 20 दिसम्बर	रोहिणी शुक्ल चतुर्दशी 21 दिसम्बर	मृगशिरा शुक्ल पूर्णिमा 22 दिसम्बर	

Rishi Dayanand - His Life And Work

-Saroj Arya, Delhi

Swamiji's tour of Bengal and U.P. was complete. Orthodoxy had received a rude shaking Dayanand was the talk of the day. Those who had eyes to see saw in his revolt India's redemption from the evils.

On the 26th of October, 1874, Swamiji was in Bombay. He was back to the land of Saurastra at last. He had left this land as Mool Shanker- an obscure run away from home, a quarter of a century before, and returned as Dayanand Saraswati- a socio - religious reformer unequaled in scholarship and saintliness. The reader is already familiar with the stages of this evolution. His wanderings in quest of soul's homeland, the hardships suffered the disciplined life he led, the assiduity with which he studied the ancient lore- these need no recapitulation. They only go to prove the truth of the oft-quoted verse:

The heights by great men reached and kept

were not attained by sudden flight.

But they, while their companions slept

Were toiling upwards in the night.Swamiji's arrival created a stir in the city. Hundreds of men and women came to have his darshana and to hear him. The orthodox pundits scented danger and started propaganda to stop people from going to Swamiji. Some remarked that he was a government spy, others that he was a Christian in the garb of a Hindu sanyasi, others to turn the authorities against him had the audacity to say that he was an agent of Nana sahib-the great rebel in the Indian Mutiny. Swamiji did not feel perturbed at this fabrication, because he knew that his onslaughts on Pauranic faith were bound to provoke the wrath of self-seeking priests who would protect their interests by fair means or foul.

Swamiji's denunciation of the evil practices held sacred by Vallabhacharis (a powerful Vaishnava sect) created a flurry among the leaders of that sect. One of them Goswami Jiwanji, mad in his fanaticism determined to do away with the reformer. He hired some ruffians who were constantly following Swamiji, but got no opportunity for assault. This method not succeeding, he tried another. He promised Sawanji's cook, a reward of Rs.1000, if he should poison his master's food. As an earnest he gave him five rupees and some sweets, and by way of assurance handed him a note confirming the reward in the event of accomplishment of his purpose. Swamiji got a clue to this affair, and when the servant returned, he questioned him;

To be continued...

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

यह दो दिन का सत्र काफी प्रेरणादायक रहा है। अपने पूर्वज महात्माओं, प्रेरक जनों के विचार पता चले और अपने वेदों के बारे में कुछ प्रेरक सिद्धान्त।मान्यवर विनोद लोहिया जी ने सत्र में आने का मुझे पहले भी आमन्त्रण दिया था। लेकिन मुझे 27/10/18 को आने का अवसर प्राप्त हुआ क्योंकि मेरा जन्म आर्यसमाज परिवार में हुआ है, इस कारण मुझे राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा का अनुभव बहुत अच्छा लगा है। मेरे विचार में यह था कि इस प्रकार से आर्यसमाज का प्रचार होना चाहिए। मैं लोगों के बीच में अपनी बातों के माध्यम से बताता हूँ कि आज महर्षि दयानन्द के विचारों की हर परिवार को आवश्यकता है, क्योंकि अब भी लोगों में अन्धविश्वास, रूढ़िवादी परम्परा विद्यमान है। लोगों में अपने प्रति, समाज के प्रति व देश के प्रति समर्पण भावना होनी चाहिए।

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के इस निर्माण के महान कार्य में सहयोग तन-मन-धन से रहेगा।

नाम: विनोद कुमार एडवोकेट, आयु: 25 वर्ष, कार्य: अध्यापक, पता: मड्डा मौहल्ला, गाँव जौनपुर, नई दिल्ली

आचार्य जी के द्वारा दो दिन के सत्र से बहुत कुछ सीखने को मिला। धर्म के बारे में जैसे मुर्तिपूजा, मन्दिर, दागी बाबा, दासप्रथा और आजकल जो धर्म का गलत प्रचार कर रहे हैं। जैसे राधास्वामी, डेरा सच्चा सौदा और हिन्दुओं में प्रचलित अंधविश्वास और डर के बारे में खुलकर प्रमाण के साथ शिक्षा दी गई। हमने जो गलत इतिहास पढ़ा था उसके बारे में सही ज्ञान प्राप्त किया। हम जाति और वर्गों में बटे हिन्दुओं को कैसे एकता में बाँध सकते हैं वह जाना। इससे मुझे भगवान, धर्म, धर्म संविधान, वेद शिक्षा के बारे में बहुत सीखने को मिला। जब जब वेद शिक्षा का उल्लघंन हुआ तो तबाही हुई, ये जाना।

मैं ऐसा ही सत्र बार-बार आयोजन करवाना चाहता हूँ। पूर्ण रूप से वेद का ज्ञान लेकर मैं भी इसका प्रचार करुँगा।

नाम: योगेश कुमार, आयु: 34 वर्ष, योग्यता: एम. टेक., एम.बी.ए., कार्य: एयर फोर्स, पता: गाँव घिटोरनी, दिल्ली।

सत्र में मूल सिद्धान्तों की जानकारी प्रमाणों के साथ दी गई। कई संदेहों को भी दूर किया गया। राष्ट्र की वर्तमान स्थिति से भी परिचित कराया गया। सत्र का अनुभव अच्छा रहा। वेदों की अधिक से अधिक जानकारी दी गई। इस सत्र से मैंने जाना कि में अबला नहीं हूँ, मेरा अपना अस्तित्व है तथा मैं अपने जीवन के फैसले अपनी बुद्धि के बल पर ले सकती हूँ।

मैं अपने आस-पास के लोगों को आर्य सिद्धान्तों से अवगत कराऊँगी और उन्हें दो दिवसीय सत्र के लिए तैयार करने का प्रयास करुँगी।

नाम: पूनम, आयु: 25 वर्ष, योग्यता: एम. कॉम., पता: गाँव दिचाऊँ कलां, नजफगढ़, दिल्ली।

मुझे सत्र में आकर बहुत खुशी हुई व मन को भी अच्छा लगा। आचार्या जी ने मेरी आँखें खोल दी और दिमाग की भी सारी नस-नाडियाँ हल्की हो गई। इस दो दिन के सत्र में उन्होंने हमें ईश्वर से परिचित कराया। हमें भगवान, परमात्मा, आत्मा से अवगत कराया। मुझे अपने देश के संविधान के बारे में तो पता ही नहीं था लेकिन उन्होंने हमें बताया कि भगवान ने हमारे लिए सब के लिए क्या, कौन सा संविधान बनाया है। वेद के बारे में बताया। देश की आज क्या दशा है, उससे हमें अवगत कराया।

जो संदेश मुझे मिला है वो सब तक पहुँचाने की कोशिश करुँगी।

नाम: मोनिका, आयु: 14 वर्ष, योग्यता: 9वीं कक्षा, पता: नजफगढ़, दिल्ली।

ज्ञान बहुत ज्यादा मात्रा में उपलब्ध हुआ। यहाँ पर ऐसा लगता है जैसे आज तक की शिक्षा अधूरी थी, अब पूरी हो गयी है। और मैं बहुत धन्यवाद देना चाहता हूँ अपने आचार्य जी का जिन्होंने इतना ज्ञान मुझे बिना किसी शुल्क के दिया और मैं उनसे वादा करता हूँ कि मैं उनके लक्ष्य को पूरा करने में मैं अपना सब कुछ अर्पित कर दूंगा।

नाम: सचिन, आयु: 20 वर्ष, योग्यता: बी.ए., पता: पलवल, हरियाणा।

संध्या काल

कार्तिक- मास, हेमन्त ऋतु, कलि-5119, वि. 2075
(25 अक्टूबर 2018 से 23 नवम्बर 2018)
प्रातः कालः 6 बजकर 15 मिनट से **(6.15 A.M.)**
सांय कालः 6 बजकर 15 मिनट से **(6.15 P.M.)**

मार्गशीर्ष मास, हेमन्त ऋतु, कलि-5119, वि. 2075
(24 नवम्बर 2018 से 22 दिसम्बर 2018)
प्रातः कालः 6 बजकर 45 मिनट से **(6.45 A.M.)**
सांय कालः 5 बजकर 30 मिनट से **(5.30 P.M.)**

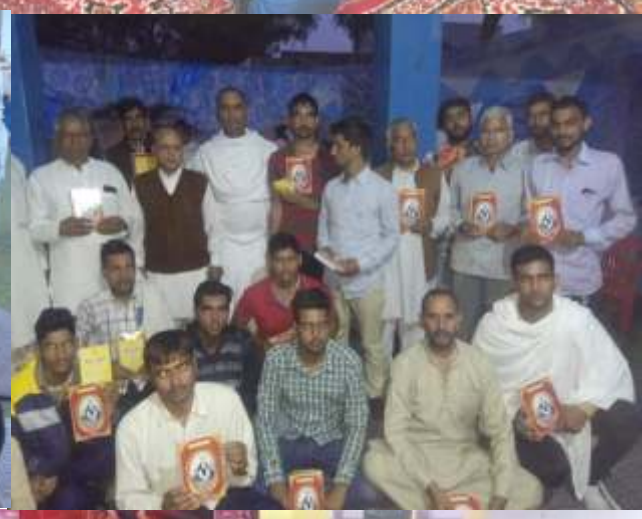

आर्य निर्माणशाला में विभिन्न स्थानों पर निर्मात्री सभा के आचार्यों द्वारा आर्य व आर्या निर्माण

स्वामी व प्रकाशक आचार्य हनुमत्प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।